Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/236
Peer Reviewed & Refereed Journal, JULY-AUG 2024, Vol- 13/84

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन

ओम प्रकाश गुप्ता

शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र), विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.–456010

डॉ0 अरूण प्रकाश पाण्डेय

शोध निर्देशक एवं प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.–456010

Paper Received On: 20 July 2024

Peer Reviewed On: 24 August 2024

Published On: 01 September 2024

Abstract

देश की शिक्षा नीतियों की वर्तमान परिस्थिति में इसकी प्रासंगिकता का परीक्षण नई शिक्षा नीति 2020 के आलोक में करे तो अगले दशक तक भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा और इन युवाओं को उच्चत्तर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा। जहाँ 2030 तक सभी के लिए समावेशी, गुणवत्तायुक्त, शिक्षा अवसर प्रदान करने, भारत को दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने तथा 2040 तक विश्व गुरू की भूमिका में आने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का गठन देश की इन्हीं आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से भी भारत को 21वी सदी में आकांक्षात्मक लक्ष्यों का पुर्नगठन करना है। इसी सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों तथा उददेश्यों में कहीं न कहीं जातिगत समानता लाने, कुप्रथाओं के विरूद्ध संघर्ष करने और जन सामान्य की शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य करने तथा भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक अभिमान के लिए इन दोनों ने शिक्षा को सर्वाधिक प्रभावशाली शस्त्र के रूप में स्वीकार किया है।

मुख्य शब्द : *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शैक्षिक विचार, समालोचनात्मक अध्ययन।*

प्रस्तावनाः–

शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्द्धन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है। अगले दशक में भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा और इन युवाओं को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा। ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। बिग डेटा, मशीन लर्निंग और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में हो रहे बहुत से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते एक ओर विश्व भर में अकुशल कामगारों की जगह म ीनें काम करने लगेंगी और दूसरी ओर डेटा साइंस, कम्प्यूटर साइंस और गणित के क्षेत्रों में ऐसे कुशल कामगारों की जरूरत और माँग बढ़ेगी जो विज्ञान, समाज विज्ञान और मानविकी के विविध विषयों में योग्यता रखते हों। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधनों की वजह से हमें ऊर्जा,

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भोजन, पानी, स्वच्छता आदि की आव यकताओं को पूरा करने के नए रास्ते खोजने होंगे और इस कारण भी जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जलवायु विज्ञान और समाज विज्ञान के क्षेत्रों में नए कु ाल कामगारों की जरूरत होगी। महामारी के बढ़ते उद्भव संक्रामक रोग प्रबंधन और टीकों के विकास में सहयोगी अनुसंधान और परिणामी सामाजिक मुद्दे बहु–विषयक अधिगम की आव यकता को बढ़ाते हैं। मानविकी और कला की माँग बढ़ेगी, क्योंकि भारत एक विकसित देश बनने के साथ–साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

रोजगार और वैश्विक पारिस्थितिकी में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों की वजह से यह जरूरी हो गया है कि बच्चे, जो कुछ सिखाया जा रहा है उसे तो सीखें ही और साथ ही वे सतत सीखने रहने की कला भी सीखें। इसलिए शिक्षा में विशयवस्तु को बढ़ाने की जगह जोर इस बात पर अधिक होने की जरूरत है कि बच्चे समस्या–समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें, विविध विषयों के बीच अंतर्संबंधों को देखने, सोचने और पाने तथा नवीन जानकारी को नये तरीके से बदलती परिस्थितियों या क्षेत्रों में उपयोग में ला सके। आज जरूरत है कि शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी–केन्द्रित हो, जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित हो, लचीली हो और समग्रता और समन्वित रूप से देखने–समझने में सक्षम बनाने वाली और अव य ही, रूचिपूर्ण हो। शिक्षा शिक्षार्थियों के जीवन के सभी पक्षों और क्षमताओं का संतुलित विकास करे इसके लिए पाठ्यक्रम में विज्ञान और गणित के अलावा बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी, खेल और फिटनेस, भाषाओं, साहित्य, संस्कृति और मूल्य का अवश्य ही समावेश किया जाये। शिक्षा से चरित्र निर्माण होना चाहिए, शिक्षार्थियों में नैतिकता, तार्किकता, करूणा और संवेदनशीलता विकसित करनी चाहिए और साथ ही रोजगार के लिए सक्षम बनाना चाहिए। सीखने के परिणामों की वर्तमान स्थिति और जो आव यक है, उनके बीच की खाई को प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और उच्चतर शिक्षा के माध्यम से शिक्षा में उच्चतम गुणवत्ता, इक्विटी और सिस्टम में अखंडता लाने वाले प्रमुख सुधारों के जरिए पाटा जाना चाहिए। 2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए जो कि किसी से पीछे नहीं है, एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जहाँ किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाले शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो। इन्हीं दृष्टिकोणों में भारत सरकार ने 29 जुलाई 2020 को आंतरिक्ष वैज्ञानिक के0 कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में घोषित किया गया। यह शिक्षा नीति 1986 की शिक्षा नीति के 34 साल बाद गठित की गयी। इस शिक्षा नीति में 27 अध्याय तथा 4 भाग निर्धारित किये गये हैं और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केन्द्र बिन्दु के रूप में बहुविषयकता और समग्र शिक्षा को लिया गया है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ–साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या–समाधान सम्बन्धी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आव यक है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परम्परा के आलोक में यह नीति तैयार की गयी है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परम्परा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आव यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा और ज्ञान परम्पराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत के सतत ऊँचाईयों की ओर बढ़ने की दृष्टि से अति आव यक है। शिक्षा पर पिछली नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा तक पहुँच के मुद्दों पर था। 1986 की राश्ट्रीय शिक्षा नीति, जिसे 1992 (एनपीई 1986/92) में संशोधित किया गया था 1986/92 की पिछली नीति के बाद से एक बड़ा कदम निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहा है जिसने सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध करवाया। तथा शिक्षा के सभी अधूरे काम को राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है।

शोध साहित्य की समीक्षा :

शोध साहित्य की समीक्षा से तात्पर्य पूर्ववर्ती शोध साहित्य का पुनरावलोकन करने से है। इसे भाोध अध्ययन की प्रथम भार्त मानी जाती है क्योकि शोध साहित्य की समीक्षा करने से उन क्षेत्रों का ज्ञान होता है जो शोध से अछूते रह गये हैं एवं जिन पर शोध करने की आवश्यकता है तथा इसके साथ ही साथ शोधकर्ता को यह भी ज्ञान होता है कि किन क्षेत्रों का अध्ययन पूर्व में हो चुका है जिससे भाोधकर्ता का समय बर्बाद न हो। इसी संर्दभ में राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर किए गये शोध कार्यो को निम्न रूपों निरूपित किया गया है–जैसे **आचार्य एस0एस(2016)** ने **''कन्ट्रीव्यूशन ऑफ इमीनेन्ट इण्डियन एजुके ान पोलिसी टु द थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ इण्डियन एजुकेशन ड्यूरिंग द नाइनटीन एण्ड टवेन्टी सेन्चुरीज विथ स्पे ाल रिफरेन्स टू महाराष्ट्र।''** नामक शोध शीर्शक से भाोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के भारतीय शिक्षा नीतियों के भौक्षिक विचारों का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के भारतीय शिक्षा नीतियों के भौक्षिक विचारों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक मजबूत आधार प्रदान किया। जिसमें आदर्शों और मूल्यों को पिरोकर भारतीय संस्कृत के ताने–बाने को मजबूत किया। भारतीय विचारकों जहॉ एक ओर प्राचीनता को समेटकर शिक्षा व्यवस्था में संस्कृति, आध्यात्म, मानवीय तथा सद्मूल्यों को स्थान दिया वहीं दूसरी ओर इसमें आधुनिक ज्ञान–विज्ञान तथा वैश्विक संस्कृतियों के समालोचना से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वैश्विक परिधि में खड़ा किया। इस प्रकार उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के भारतीय शिक्षा नीतियों के भौक्षिक विचारों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अमूल्यनीय योगदान दिया। इसी प्रकार **मिश्र, दुर्गेश कुमार (2012)** ने **''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के शिक्षा संबंधी तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन''** नामक शोध शीर्षक से अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के शैक्षिक विचारों की तुलना करना तथा वर्तमान परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करना था। इस अध्ययन में उन्होंने

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाया कि– राश्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने शिक्षा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया। शिक्षा के विकास हेतु जहॉ शैक्षिक प्रविधियों के विकास पर बल दिया। वर्तमान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यावसायिकता एवं मूल्यपरक शिक्षा के विकास हेतु इसके विचार अत्यन्त उपयोगी एवं प्रभावकारी सिद्ध हुए हैं।

शोध अध्ययन का महत्वः–

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमें स्वराज्य तो मिल गया परन्तु सुराज्य हमारे लिए सुखद स्वप्न की भाँति ही बनकर रह गया। इसी कारण वैश्विक पृश्ठभूमि पर प्रायोजित शिक्षा योजना में परिवर्तन तो किया गया किन्तु यह परिवर्तन भी अप्रासंगिक प्रतीत ही रहा है जबकि दुनिया के विकसित और विकासशील देशों ने अपनी शिक्षा योजना में वांछित परिवर्तन करके प्रासंगिक बना लिया है। अतः आव यकता हुई कि हमें भी अपनी शिक्षा योजना को गति प्रदान करके भारतीय वातावरण के अनुकूल प्रासंगिक बनाये। इसी को चरितार्थ करते हुए निवर्तमान भारत सरकार ने भारतीय पृष्ठभूमि के आलोक में शिक्षा नीति 2020 का गठन और संचालन आरम्भ कर दिया है। इस नवीन शिक्षा नीति 2020 कर प्रमुख उद्देश्य देश के युवाओं को कौशलता युक्त ज्ञान का प्रदान करके उनमें सृजनशीलता और उत्पादकता क्षमता का विकास सुनिश्चित करना है। यह शिक्षा आज के दौर में इसीलिए आव यक है कि आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग में प्रायः हमारा चरित्र, हमारी नैतिकता एवं हमारे कर्तव्यों का पतन हो रहा है। आज हम मात्र अपने भौतिक सुख और सुविधा के लिए दूसरों की बलि देने में भी नहीं हिचक रहे हैं। अतः इन गुणों के ह्रास का कारण ढूँढ़ना एवं उन्हें पुनः प्रतिस्थापित करना, लोगों में भौतिक सम्पन्नता से नहीं अपितु आध्यात्मिक युग में हमारे आध्यात्मिकता विचलित हो रही है। अतः इसे मजबूत हाथों से पकड़ने की आव यकता है जिससे कभी विश्व गुरू कहलाने वाला भारतवर्ष आज पुनः अपनी उसी प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकने में सफल हो सकेगा। राष्ट्रों के विकास की गति न तो मन्द व्यवस्थाओं पर और नहीं द्रुतगामी साधनों पर निर्भर किया जा सकता है वरन् ऐसी स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय सहकार और सद्भावना आज के युग की माँग की जा सकती है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत को प्राचीन धरोहरों में से एक माना जाता है जिसमें भारतीय को संकीर्णता से परे एक वृहद विचार अपनाने पर बल दिया है। साथ ही इसमें वर्णित भलोकों में भारतीय जीवन मूल्यों की झलक प्राप्त होती है जिसमें उल्लेख किया गया है कि–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुख भाग भवेत।।[26]

इतना ही नहीं आज विश्व के वर्तमान अशान्ति के मूल में आचरण की अस्थिरता और चरित्र की दुर्बलता है साथ ही दुरचरण और अनैतिकता व्यक्ति और समाज के परम भात्रु बनकर उभरे हैं। जैसा कि महात्मा तुलसीदास भी सर्वपूज्य ग्रन्थ रामचरित मानस में लिखा है कि–

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

'जिमि कुपंथ पग देत खगेसा,

रहइ न तन बल बुद्धि लवलेसा।'[27]

अतैव यदि व्यक्ति, समाज, राश्ट्र तथा मानवता को सर्वनाश से बचाना है तो अपनी शिक्षा व्यवस्था को आध्यात्मिकता और नैतिकता का सहारा देना ही होगा। अतः आव यकता है कि प्रत्येक राश्ट्र की शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय बने। इसके लिए तथ्यों का सत्य निरूपण एवं विवेकपूर्ण चयन आवश्यक है। इसीलिए हर रा ट्रों का यह दायित्व बन जाता है कि वह अपने नागरिकों अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करें। विडम्बना यह है कि आज हमारे देश में जो शिक्षा संचालित हो रही है उसमें शिक्षित बेरोजगारी और शिक्षित नवयुवकों में निराशा का वातावरण उत्पन्न हो रहा है। तब यह सूक्ति और भी प्रासंगिक हो जाती है कि–[28] **बुभुक्षितः किम् न करोति पापम्**। अर्थात् भूखा व्यक्ति कौन–सा पाप नहीं कर सकता है। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षा संरचना को इस रूप में पिरोने की प्रयास किया गया है कि राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन करके उसे भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बना सके। दूसरी ओर इसे वैश्विक मंचों पर अपने ज्ञान–विज्ञान के विकास से साथ खड़े होने में भी सक्षमता प्रदा करने की क्षमता भी उत्पन्न कर सके।

शोध समस्या कथन – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भौक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भौक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन करना।
1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक शिक्षा–व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों को दूर करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक विचार :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक विचारों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में निम्न रूपों में स्पश्ट किया जा सकता है–

- ❖ बहु–भाषिकता और अध्ययन–अध्यापन के कार्य में भा ा की भाक्ति को प्रोत्साहन देना।
- ❖ जीवन कौशल जैसे, आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन अपनाना।
- ❖ सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर, इसके बजाय कि साल के अंत में होने वाली परीक्षा को केन्द्र में रखकर शिक्षण हो जिससे कि आज की 'कोचिंग संस्कृति' को ही बढ़ावा देना।
- ❖ तकनीकी के यथासम्भव उपयोग पर जोर देना।
- ❖ सभी पाठ्यक्रम, शिक्षण–शास्त्र और नीति में स्थानीय संदर्भ की विविधता और स्थानीय परिवेश को शामिल करना।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- ❖ सभी भौक्षिक निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन करना।
- ❖ स्कूली शिक्षा से उच्चतर शिक्षा तक सभी स्तरों के शिक्षा पाठ्यक्रम में तालमेल बनाना।
- ❖ शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया का केन्द्र मानना।
- ❖ भौक्षिक प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता ऑडिट और सार्वजनिक प्रकटीकरण के माध्यम से सुनिश्चित करने के लिए एक 'हल्का, लेकिन प्रभावी' नियामक ढांचा साथ ही साथ स्वायत्ता, सुशासन और सशक्तीकरण के माध्यम से नवाचार और आउट ऑफ–द–बॉक्स विचारों को प्रोत्साहित करना।
- ❖ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृ ट स्तर का शोध कार्यक्रम बनाना।
- ❖ शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा निरंतर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत समीक्षा करना।
- ❖ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परम्पराओं को शामिल करना और उससे प्रेरणा पाना।
- ❖ शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा बनाना।
- ❖ मजबूत, जीवंत सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त निवेश को बढाना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययनः–

आज भारत सभ्य दुनिया के समक्ष विविधता में एकता के मूर्तिमान आदर्श की तरह खड़ा दिखाई पड़ता है क्योंकि आज विश्व में और स्वयं में अद्वैत देखना, अनेक के बीच एक को स्थापित करना, ज्ञान के सहारे इसे आवि कृत करना, क्रिया के जरिये इसे स्थापि करना, प्रेम में इसे मूर्त करना और जीवन में इसे प्रमाणित करना, सदियों से भारत खतरे और कठिनाई के समक्ष अच्छे या खराब दिनों में यही करता आया है। जब हम उसके इतिहास के इस केन्द्रीय और शश्वत तत्व को खोज लेंगे तो हमारे अतीत से हमारे वर्तमान को विभाजित करने वाली खाई न रहेगी। इसीलिए आज हमें यह स्वीकार भी करना होगा कि चाहे भारतीय हो अथवा किसी भी राश्ट्र का कोई एक भी व्यक्ति, जब तक वह अपने को सही करने का उत्तरदायित्व खुद नहीं लेता है, तब तक न उसके द्वारा निर्मित समाज सही हो सकता है, न राश्ट्र और न ही व्यापक दृश्टि में विश्व। इसीलिए आत्म शुद्धि वैयक्तिकता स्वभावी होते हुए भी अन्त में सम्बन्धित समश्टि से है क्योंकि समश्टि के माध्यम से ही व्यक्ति अपने आध्यात्मिक अथवा उदात्त व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकता है। अगर नैतिक भून्यता में अब भी मानव समूह भटकेगा या राश्ट्र सही मार्ग खोजने का प्रयास करेंगे, तो उन्हें वृहद शून्य ही मिलेगा। समाज की रचना का आधार ईर्श्या, द्वेश तथा कटुता नहीं बन्धुत्व है। राश्ट्र की श्रेश्ठता का माप सैनिक शक्ति नहीं हो सकती, उसकी वह सद्भावना होगी जिसे वह दूसरे राश्ट्रों के प्रति रखेगा। अतः आवश्यकता है कि मनुश्य अपने को पहचाने, राश्ट्र यह पहचाने कि वह कौन से मूल्यों को स्वीकार करे तथा उन्हें आचरण का अंग बनाये जिससे कि उनका अस्तित्व भी सुरक्षित रहे एवं अन्य राश्ट्रों का भी अस्तित्व सुरक्षित रहे। अतः गाँधी के आर्थिक, सामाजिक,

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राजनैतिक, धार्मिक एवं शैक्षिक विचार व्यावहारिकता की कसौटी पर, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सही विकल्प प्रतीत होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य से यह आशा की जा सकती है कि आज की भ्रमित भौक्षिक व्यवस्था को सुधारने में पर्याप्त सहायता मिलेगी। क्योंकि किसी राश्ट्र की शिक्षा , मानवता की जननी, सत्य की संरक्षिका, समाज की निर्माणीनी, संस्कृति की पो ाक, संस्कार की सहायिका, चरित्र का प्रशिक्षक, आजीविका का नियोक्ता, ज्ञान की निर्देशिका, एकता की कुंजी तथा रा ट्रीयता की शिक्षिका होती है। राश्ट्र के दुर्बलता का अभिप्राय यह होता है कि राश्ट्र अज्ञान, असत्य कुप्रथा, कुरीति, कुसंस्कार, अनैतिकता, संकीर्णता, भ्रश्टाचार, बेरोजगारी, महामारी एवं विखण्डता से युक्त रहेगा। इसी सन्दर्भ में **डॉ0 युसुफ हुसेन**[30] द्वारा चैपसवेवचील वश्म्किनबंजपवद में लिखा गया व्यक्तव्य प्रासंगिक प्रतीत होता है कि जिस शिक्षा में समाज और देश के कल्याण की चिंता के तत्व नहीं होते हैं, वह कभी भी सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती। अतैव भारत सरकार द्वारा संचालित नवीन शिक्षा योजना राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन आवश्यक एवं प्रासंगिक प्रतीत होता है।

प्राथमिक शिक्षा–व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों को दूर करने हेतु सुझाव :–

. प्राथमिक शिक्षा –व्यवस्था में विद्यमान चुनौतियों को दूर करने हेतु प्रस्तुत सुझावाओं को निम्नलिखित रूपों में स्प ट किया जा सकता है–

1. हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना।
2. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना।
3. सीखने के तौर–तरीके और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता, प्रतिभा और रूचियों के अनुसार जीवन में अपनाने में लचीला रास्ता चुनना ।
4. कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येत्तर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और भौक्षणिक धाराओं आदि के बीच कोई स्पश्ट अलगाव न करना।
5. ज्ञान क्षेत्रों के बीच हानिकारक ऊँच–नींच और परस्पर दूरी एवं असम्बद्धता को दूर करना।
5. सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहु–विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु–विषयक और समग्र शिक्षा का विकास करना।
6. अवधारणात्मक समझ पर जोर, न कि रटंत पद्धति और केवल परीक्षा के लिए पढ़ाई पर बल देना।
7. रचनात्मकता और तार्किक सोच तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करना।
8. नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे, सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक सम्पत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय पर बल देना आदि।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध निष्कर्षः–

अतः इस बात की आवश्यकता महसूस हो रही है कि वर्तमान नवीन शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा की पुनर्संरचना की जाए जिससे कि भारतीय शिक्षा वर्तमान समाज की तात्कालिक आव यकताओं को पूरा कर सके। बढ़ती हुई आबादी और बढ़ते शिक्षा संस्थाओं की होड़ को देखते हुए यह सम्भव नहीं कि सभी शिक्षितों को नौकरी मिल सके। ऐसी दशा में उन्हें गृह उद्योगों में लगाये जाने की व्यवस्था विद्यालयीय वातावरण से ही होनी चाहिए। कुटीर उद्योगों का एक निश्चित क्षेत्र होना चाहिए। भारत में कुटीर उद्योगों की कमी नहीं है। साथ ही इनके उत्पादन से हर हाथ काम और हर हाथ को दाम प्राप्त होने की असीम सम्भावनाएँ हैं। ब ार्ते इसमें बड़े कल–कारखाने प्रवश न करने पायें। कच्चा माल देने और बना हुआ माल लेने के लिए, सरकारी समितियों को यह दायित्व सौंपा जाना चाहिए। इन्हीं विचारों को रा ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मंतव्यित किया गया है। वर्तमान के अर्थ प्रधान युग में अर्थकारी शिक्षा का विशेश महत्व है ऐसी शिक्षा जो उत्पादन से सम्बन्धित है और इसे प्राप्त कर लेने पर किसान अथवा व्यापारी, शिक्षक अथवा कारीगर की सन्तानें रोजगार के लिए दर–दर न भटक कर व्यावहारिक शिक्षा के माध्यम से ही अपने–अपने कार्य में स्वयं दक्षता प्राप्त कर सकने में सफल हो सके।

भारत में छोटे–छोटे कारीगर जैसे सुनार, लुहार, राजगीर, नाई, मोची, दर्जी आदि शिल्पकार हैं जिनके बच्चे प्रारम्भ से ही अपने माँ बाप के साथ काम करने लगते हैं और बढ़े होकर कार्य में दक्षता प्राप्त कर लेते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इसी विचारधारा को असली जामा पहनाया जा रहा है। अतैव यदि इन्हें क्राफ्ट स्कूल में सैद्धान्तिक के साथ–साथ प्रायोगिक शिक्षा भी मिले तो इनकी दक्षता, कुशलता में चार चाँद लग जायेंगे। अधिकांशतः बेरोजगारी की शिकायत उन्हीं के सामने ही रहती है जो अपने पैतृक धन्धे को छोड़कर अथवा श्रम से बचकर दफ्तरों में बाबू बनना और कुर्सी पर बैठकर पंखे की हवा खाना पसन्द करते हैं। बेरोजगारी की लम्बी सूची में जागीरदारों, जमीदारों, अफसरों की सन्तानें ही अधिक होती हैं जो शारीरिक श्रम से बचने की लालच में आरम पाने के लिए छोटी–मोटी नौकरियाँ ढूँढ़ते रहते हैं। श्रम के प्रति गरिमा के भाव का अभाव होने पर युवक, युवतियाँ परावलम्बी ही बने रहते हैं।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु अनेक आयोगों ने अपने सुझाव दिये हैं। किन्तु सरकारें बदलने के साथ–साथ आयोगों के व्यावहारिक सुझाव भी फाइलों में दबकर रह जाते हैं। राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्ययन से वर्तमान सामाजिक, शैक्षिक समस्याओं के निदान में शिक्षा कितना लाभप्रद हो सकेगी। भाोधार्थी का भी स्वयं का विचार है कि इनसे भारतीय शिक्षा का सांस्कृतिक अस्तित्व सुरक्षित रहकर राश्ट्र के नवजागरण को स्थाई बनाये रखने में समर्थ होगी। प्रस्तुत भाोध प्रबन्ध इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। जिसमें भाोधार्थी ने यह प्रयास किया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समीक्षा करके स्वावलम्बन हेतु ऐसे जीवट व्यक्ति प्राप्त हो जायेंगे जो राश्ट्र की सूखी नसों के नये रूधिर का संचार कर सकें और कंकाल को पुनः युवक बनाकर राश्ट्र के द्वारा पर अवलम्बित कर सकें। अतैव राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के इन्हीं मूलभूत तत्वों पर उसे दक्षता और रोजगार परक बनाने से पूरे

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त आर्थिक संकट दूर हो जायेगा और हमारी शिक्षा भी स्वावलम्बी हो जायेगी तथा सम्पूर्ण भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करने में हम सक्षम हो सकेंगे और प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा समाप्त करते ही अपने रोजगार में लग जायेगा एवं हम देश की बेरोजगारी को दूर करने में सक्षम हो सकेंगे। इस तरह से यह स्पश्ट है कि राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश की भौक्षिक धारा, बेरोजगारी, मूल्य नैतिकता, परोपकार और भाईचारा के विकास के साथ भारतीय समाज को शिक्षा के सर्वोच्च शिखर पर शिक्षा रूढ़ कर हर हाथ को काम दिलाने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेंट्स विथ ट्रूथ : एक आत्मकथा, पृ0 176

सम्पूर्ण गाँधी वांग्मय, खंड–21, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण–1967

महात्मा गाँधी के संचित लेख (सी डब्लू एम जी) विवाद (https://archive.today/20120524200743/http://www.gandhiserve.org/cwmg/cwmg_controversy.html) (गाँधी सेवा)

नेल्सन मंडेला, एक पवित्र योद्धा : दक्षिण अफ्रीका के मुक्तिदाता भारत के मुक्तिदाता (http://www.time.com/time/time100/poc/magazine/the_sacred_ warrior13a.html)

दत्ता, कृश्णा और एंड्रयू रोबिनसन, रविन्द्रनाथ टैगोर : एक संकलन, पृ ठ 2

एम0के0 गाँधी : एक आत्मकथा (http://kamdartree.com/Dr%20PJ%20 Mehta.tm) Archived (https://web.archive.org/web/20080515055835/http://kamdartree.com/Dr%20PJ%20 Mehta.htm) 2008-05-15 at tha vabec maschine, 21 मार्च 2006 को पुनः प्राप्त किया गया।

मोहनदास कैसे और कब प्रलेखन : गाँधी अपने नाम के अनुरूप ही ''महात्मा'(https:// web.archive.org/web/20080515055827).

द एसेंसियल गाँधी में पुनः प्रकाशित हुआ : उनके जीवन, कार्यों और विचारों का संग्रह (http://www.amazon.com/gp/reader/0394714660).

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies